© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

बालकों में भाषिक विकास

सुमन बाला, sumanbala511979@gmail.com

'बाल्यावस्था जीवन की आधारभूत अवस्था है।' जीवन के शुरू के वर्षों मे अभिवृत्तियों, आदतों और व्यवहार के प्रकार पक्के हो जाते हैं। बालरूप की शक्ति यही है जिसका अनुभव हम काव्य, संगीत, चित्रा एवं मूर्ति में करते हैं। भारतीय दृष्टि बाल–सौंदर्य की अनुभूति में रूप की पूर्णता उसकी शक्ति का स्रोत एवं स्वरूप है वह रूप, जिसकी पूर्णता मे प्रत्येक अंग अपने प्रभाव के साथ, सगीत में संवादी स्वर की भांति, अंगी में समरस हो जाता है सतंलुन, सामंजस्य आदि रूप संपदा इतनी पूर्ण कि कुछ भी चाहने को शेष नहीं रूप एवं रूपित, बाह्य और आभ्यंतर, शरीर एवं आत्मा का ऐसा आश्चर्यजनक अभेद जिसमे सार के सारे भेद गल गए हैं, समय की सीमा समाप्त और जीवन के अंतराल मे महाकाल के लय की अनभुति बाल–सौंदर्य द्वारा उन्मीलित लोक मे सत्य प्रमाणित होती है। अंतर्मन के ज्योतिर्लोक में अभूतपर्वू ज्योतियों का प्रकाश, अनभुत आनंदों की अनुभूति, अदृष्ट दिशाओ का उन्मीलन, सद्यः प्रसतू रस–गंध–स्पर्श रूप–ध्वनि का प्रवाह और अंत मे, अपने ही भीतर एक नतून, आनंद–विभोर, प्रभाओं से पोषित, मानव के आविर्भाव की जाग्रत अनुभूति बाल–रूप में होती है, चाहे वह सूर का बाल रूप कृष्ण, तलुसी का बाल रूप राम–लक्ष्मण का प्रत्येक घर परिवार में जन्मा सामान्य बाल–रूपा। बाल–अनभुति धूप सी सरल, स्पष्ट और सत्य होती है, और सरल का विश्लेषण नहीं होता। बालरूप के जादू को हम सब जानते हैं। बालरूप सक्रिय तत्व है और मन के मनोहर, मोहक भागों के लिए अभिव्यक्ति की भाषा। बालरूप बोलता है, और अव्याज मनोहर रूप तो निर्मल, निष्कलुष आत्मा की वाणी है। बाल रूप बताता ही नहीं, वह अपने सकेंतों, ध्वनियों, अंतर में अनुरणन पैदा करने की शक्ति से जताता भी बहुत कुछ है। यह कभी दृढ़ आत्मा को अपने कलेवर की गरिमा से प्रकट करता है, कभी गति से काल की लय और जीवन की ऊर्जाओं, को कभी मन के सकुमार भावों को तो कभी आत्मा के मुक्त आनंद को। बालरूप अभिव्यक्ति के लिए समर्थ माध्यम होने के कारण व्यापक तत्व हैं। जहाँ भी निर्माण, नियोजन, सृजन, व्यवस्था, विन्यास, सन्निवेश, लय गति मुक्त उतार–चढ़ाव, सज्जा, वेश–भूषा, अलंकरण और वृरतित्व की कोई विद्या, श्रृंगार की रूचि तथा अभिनव और अभिराम के लिए प्रस्ताव, वहाँ–वहाँ बाल रूप है। मन आश्चर्य से भर जाता है, आहलाद से रोमांचित हो जाता है। रग–रग और रोम–रोम में रोमांच और आनंद की हिलोर उठती है। कहीं–कहीं बालरूप इतना बहुल और महनीय हो उठता है कि वह अपने ही बंधनों को तोड़कर वह उठता है।

बाल क्रीड़ाओं में सभूंत मचलती, मदमाती, इठलाती गतियो का वैभव–विलास है। बाल–नृत्य मे गति की लोच और उसका स्पंदन आँखो के आगे उतर आते हैं। भुवन के समूचे विन्यास मे ऊर्ध्वाधर गतियाँ अपने सपूंर्ण वैभव के साथ मानो गहकर ग्रथित कर दी जाती हैं अभिव्यक्ति का कोई क्षेत्र नहीं जहाँ गति न हो। व्यक्ति मे गर्भागमन के क्षण से मृत्यु तक हमेशा परिवर्तन होता रहता है, वह कभी एक–सा नहीं रहता। शैशवास्था और बाल्यावस्था भर उसकी शारीरिक और बौद्धिक उन्नति होती रहती है, जो कि युवावस्था की ओर बढने की निशानी है। बालक वस्तुतः एक व्यक्ति ही है। इसमें एक ओर माता के गर्भस्थ भ्रुण के अतीत के सस्कंार हैं तो दूसरी ओर उसमें भविष्य का बालक, किशोर तथा प्रौढ व्यक्ति की संकल्पना छिपी है। महाभारत कालीन शोधां में पता लग चुका था कि गर्भावस्था मे भ्रणू सीखता है। इस तथ्यात्मक सत्य की पुष्टि 1984 मे अमरीकी मनोवैज्ञानिकों ने अपने शोधों के माध्यम से की है। चिकित्सा विज्ञान एवं मनोविज्ञान के सयुंक्त प्रयासों से इस दिशा में अन्य अन्वेषणात्मक तथ्य सामने आ रहे हैं। मनोविज्ञान वस्तुतः एक अंतरविज्ञानीय क्षेत्र है। 1940 के अंत मे भाषाविज्ञानी भाषार्जन की जिज्ञासाओ के लिए उत्पादन और बोधन के रहस्य समझने के लिए मनोविज्ञान की ओर झुके। 1950 मे थामस सीबक और चार्ल्स आसगुड ने मिलकर भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान के बीच अंतः क्रियाओ के लिए एक समिति की स्थापना की। भाषाविज्ञान यदि भाषा की भाषाई व्यवस्था का वैज्ञानिक सिद्धान्त है तो मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओ के भाषाई ज्ञान का सिद्धाता मनो भाषाविज्ञान इन दोनों का समन्वित उपागम है। वस्तुतः मनो भाषाविज्ञान का उद्द्देश्य इस तथ्य को स्पष्ट करना है कि भाषाई ज्ञान संज्ञानात्मक व्यवस्थाओं में किस प्रकार द्योतित होता है। साथ ही, वह इन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओ की ओर सकेंत करता है जो इसका उपयोग करती है। भाषा सिद्धांत तथा अधिगम सिद्धांत परस्पर सबं होकर भाषा–अधिगम के सिद्धांतों का गठन करते हैं। मनोभाषा विज्ञान का मुख्य कार्य उन समस्त मानसिक प्रक्रियाओ का विवेचन करना है, जो भाषा ज्ञान, भाषा सप्राप्ति और भाषा–व्यवहार से सबंध है। भाषा–अर्जन मे बालक क्या अर्जित करता है, किस प्रकार अर्जित करता है तथा संदेशो के बोधन एवं अभिव्यक्ति मे इनका किस प्रकार उपयोग करता है आदि प्रमुख हैं। ए.आर.डीबोल्ड के अनुसार, 'मनोविज्ञान मुख्य रूप मे सदंशेो और मानव व्यक्तियों की विशेषताओ के मध्य संबंधो से सब है, जो इस सदंश का चयन और व्याख्या करते हैं। पॉल फ्रीज के अनसुार 'मनोभाषाविज्ञान हमारी अभिव्यक्ति की आवश्यकताओं और संप्रेषण के बीच सबंधो का अध्ययन है और हमारे बाल्यकाल या बाद में सीखी गई भाषा द्वारा प्रदत्त माध्यम से सब है।'

सप्रेंषण की प्रक्रिया

मनोभाषाविज्ञान को संप्रेषण की क्रिया को ध्यान में रखना होता है। वक्ता और श्रोता अपने सदंशे को जिस स्थिति में रखता है उसका प्रतिबिंब भी वहीं दर्शाता है। इस अवस्था में मनो भाषाविज्ञान दो दिशाओं मे कार्य करता है 1. मनोविज्ञान वक्ता और श्रोता की प्रक्रिया की व्यवस्था, संकेतन और विसकेंतन, मानसिक स्थिति जो भाषा के उत्पादन मे सहयोग करता है। साथ ही, यह सामाजिक या व्यक्तिगत समूहो के बीच संबंधो के मानसिक प्रभाव का भी अध्ययन करता है। 2. भाषाविज्ञान भाषा के इन पक्षों का अध्ययन करता है कोड की सामान्य व्यवस्था, संदेश के घटक और इनके कोड की रूपावली की व्यवस्था, सयोंजक अनुक्रम की प्रकारता और वाक्य विन्यासात्मक व्यवस्था की 'गतिकी' एवं भाषा का उद्भवा मनोभाषाविज्ञान के सामने कुछ विचारणीय समस्याएँ है, जिनके विश्वसनीय समाधान मे मनोभाषाविद लगे हुए हैं;

क. बालक अपनी मातृभाषा कैसे सीखता है ?
ख. बाल भाषा और व्यस्क भाषा मे क्या अंतर है ? पहली दूसरी मे कैसे बदलती है ?
ग. भाषा अधिगम सार्वभौमिक है तब भी यह पता लगाना कि इसका अधिगम कैसे होता है ?
घ. भाषिक रूप से अर्जित की गई और संवदेनात्मक रूप से उत्पन्न भाषा की इकाई मे क्या संबधं है ?
ड. वाक्यो का उत्पादन कैसे होता है और वे कैसे समझे जाते हैं ?